PART-**1**

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता- भास्कराचार्य

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता (Geographers of Ancient India)

विश्व का प्राचीनतम ज्ञान भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है । रामायण और महाभारत काल से लेकर बारहवीं शती ईस्वी तक अनेक भारतीय विद्वानों ने विभिन्न भौगोलिक पक्षों का वर्णन अपने-अपने ग्रंथों में किया है। प्राचीन काल में भूगोल नाम का कोई अलग विषय नहीं था किन्तु धरातलीय तथा आकाशीय पिण्डों से सम्बंधित अध्ययन क्षेत्रशास्त्र के रूप में प्रचलित था। इसीलिए भूगोल और खगोल को एक-दूसरे से सम्बद्ध माना जाता था। गणितीय भूगोल और खगोलीय भूगोल प्राचीन भूगोल के प्रमुख पक्ष थे। इसके साथ ही भौतिक तथा मानवीय तथ्यों के प्रादेशिक वर्णन भी इसके अन्तर्गत समाहित होते थे। प्राचीन भारत के प्रमुख विद्वान निम्नांकित हैं जिन्होंने अपने ग्रंथों में भूगोल के विभिन्न पक्षों की व्याख्या और वर्णन किये हैं।

(7) भास्कराचार्य

बारहवीं शताब्दी (1114 ई०) में एक महान गणितज्ञ और खगोलवेत्ता हुए थे जिन्हें भास्कराचार्य के नाम से जाना जाता है। उन्होंने ‘सिद्धांत शिरोमणि’ और ‘करणकुतूहल’ नामक दो प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे थे। प्रथम ग्रंथ में अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और ज्योतिषशास्त्र सम्बन्धी जानकारी दी गयी है। दूसरे ग्रंथ में कुछ प्रमुख अन्वेषणों का विवरण दिया गया है । भास्कराचार्य ने बताया था कि पृथ्वी गोल है और उसमें गुरुत्वाकर्षण शक्ति विद्यमान है जिसके कारण वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। उन्होंने पृथ्वी को 360° में विभाजित किया और अक्षांश तथा देशांतर रेखाओं द्वारा नगरों की अवस्थित निर्धारित करने में उनका उपयोग किया। भास्कराचार्य ने पृथ्वी को गोल मानकर ही सारी गणनायें की हैं।